



باللغة الهندية
हिन्दी



طريقة السلف في حفظ القرآن

कुरआन याद करने का सलफ़ का तरीका

الدكتور الشيخ هيثم بن محمد جميل سرحان

अनुवाद: साबिर हुसैन बिन मुहम्मद मुजीबुर रहमान



<https://sarhaan.com>

<https://mahadsunnah.com>



कुरान को याद करने का सलफ का तरीका:

कुरआन को याद करने में लोगों के तीन प्रकार हैं: अति करने वाले, कोताही करने वाले एवं संतुलित मार्ग अपनाने वाले।

- एक वर्ग वह है जो कुरआन को पूर्णतः छोड़े हुआ है, उसको पढ़ता भी नहीं है।
- एक वर्ग वह है जो कुरआन को बिना समझे पढ़ता है।
- तथा तीसरा वर्ग अहले सुन्नत वल जमाअत का है -अल्लाह हमें तथा आपको उन में से बनाए-।

सलफ अर्थात् सदाचारी पूर्वज हर दिन दस आयतें याद किया करते थे, तथा प्रत्येक दिन वह इन आयतों के अर्थों का ज्ञान प्राप्त करते थे, उनमें सोच-विचार किया करते थे, और प्रत्येक दिन अमल करने के लिए अल्लाह से मदद मांगा करते थे।

सलफ इसी प्रकार से किया करते थे, वो याद करना बिल्कुल नहीं छोड़ते थे, और न कुरआन की आयतों में सोच-विचार करना एवं न उस पर अमल करना छोड़ते थे।

तो आप क्या करेंगे?

हर दिन आप कुरआन याद करें।

अच्छा यदि आप इन आयतों की तफ्सीर पढ़ना चाहें तो क्या होगा?

कोई अगर यह समझता हो कि तफ्सीर पढ़ने में अधिक समय लगेगा तो ऐसा कदापि नहीं है।

आप कोई भी संक्षिप्त तफ्सीर उठा लें, उदाहरण के रूप में शैख अब्दुर्रहमान बिन नासिर सअदी की तफ्सीर ले लें, यह अति सरल एवं संक्षिप्त

तफ्सीर है, या उर्दू में तफ्सीर अहसनुल बयान ले लें अथवा हिन्दी के लिए वह तफ्सीर जिसे किंग फ़हद कुरआन प्रिंटिंग कॉम्पलेक्स ने छापा है वह उठा लें।

दस आयत की तफ्सीर पढ़ने में आपको पाँच मिनट भी नहीं लगेगा।

कुरआन के हज़्र अर्थात् छोड़ने से बचना चाहिए, क्योंकि रसूल क़यामत के दिन अपने रब से शिकायत करेंगे:

﴿وَقَالَ الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا﴾

[سورة الفرقان: ३०]

और कुरआन को छोड़ने का अर्थ है उसको न पढ़ना, उसमें सोच-विचार न करना, उस पर अमल न करना एवं उससे उपचार करना छोड़ देना।

अतः कुरआन को याद करने के संबंध में लोगों के तीन वर्ग हैं: अति, न्यून एवं संतुलित।

एक वह वर्ग है जो कुरआन को पढ़ता नहीं है, उसे छोड़ देता है।

एक वर्ग वह है जो याद तो करता है परंतु उसमें सोच-विचार नहीं करता है, -ऐसा करने से हम अल्लाह से सुरक्षा व पनाह चाहते हैं- ये लोग ख़्वारिज हैं जो कुरआन को पढ़ते तो हैं परंतु यह उनके गले के नीचे नहीं उतरता है।

तीसरा वर्ग वह है जो प्रति दिन इसे पढ़ता है एवं याद करता है, इसमें सोच विचार करता है, यही लोग सलफ के मार्ग के अनुयायी हैं।